(1) चरकानुसार प्रत्यंगो की संख्या है –

(1) 53 (2) 54

(3) 56 (4) 57

(2) सुश्रुतानुसार कुष्ठ व विसर्प का अधिष्ठान है –

(1) मांसधरा त्वक (2) वेदिनी

(3) लोहिता (4) ताम्रा

(3) सुश्रुतानुसार स्त्रियों मे बहिर्मुख स्रोतसो की संख्या है –

(1) 5 (2) 9

(3) 10 (4) 12

(4) वसा है –

(1) शुद्ध मॉस का स्नेह (2) मेदो धातुगत वसा

(3) शुक्रगत स्नेह (4) कोई नही

(5) "विषपुष्पक" किसका पर्याय है –

(1) अतिविषा (2) वत्सनाभ

(3) भल्लातक (4) मदनफल

(6) स्वेदवह स्रोतस का नियमन करती है –

(1) प्राण वायु (2) उदान वायु

(3) व्यान वायु (4) अपान वायु

(7) विष नाशक श्रेष्ठ औषध है –

(1) वत्सनाभ (2) चौलाई

(3) शिरीष (4) अतिविषा

(8) चरकानुसार स्त्री की श्रोणि में पायी जाने वाली अस्थियों की संख्या है –

(1) 3 (2) 4

(3) 5 (4) 6

(9) अर्क का कर्म है –

(1) वमन (2) विरेचन

(3) दोनो (4) शिरोविरेचन

(10) वमन द्रव्यों का पाँच भौतिक संगठन है –

(1) पृथ्वी+जल (2) वायु+अग्नि

(3) वायु+पृथ्वी (4) पृथ्वी+आकाश

(11) अम्लपित्त का का प्रथमत: वर्णन मिलता है –

(1) काश्यप संहिता (2) चरक संहिता

(3) सुश्रुत संहिता (4) भेल संहिता

(12) शुष्क पिप्पली का रस होता है –

(1) मधुर (2) अम्ल

(3) कटु (4) कषाय

(13) वत्सनाभ का प्रयोज्यांग है –
(1) मूल (2) पत्र
(3) कन्द (4) फल

(14) कुलत्थ का निषेध है –
(1) अश्मरी में (2) अम्लपित्त
(3) वात व्याधि (4) सभी में

(15) श्रृंगवेर किसका पर्याय है –
(1) हरिण का (2) शालपर्णी का
(3) श्रृंगाटक का (4) अदरक का

(16) नवज्वर में किस रस का निषेध है –
(1) अम्ल (2) कटु
(3) तिक्त (4) कषाय

(17) तैल निष्कर्षण हेतु प्रयुक्त यंत्र है –
(1) विद्याधर यंत्र (2) डमरूयंत्र
(3) पाताल यंत्र (4) दोलायंत्र

(18) लहसुन का निषेध है –
(1) कफावृत वात में (2) रक्तावृत वात में
(3) पित्तावृत वात में (4) 2 व 3

(19) दोलायंत्र का प्रयोग करते है –
(1) सत्व पातनार्थ (2) मर्दनार्थ
(3) स्वेदनार्थ (4) तैल निष्कर्षणार्थ

(20) मुत्रकृच्छ्र में निर्दिष्ट पर्पटी है –
(1) ताम्र पर्पटी (2) स्वर्णपर्पटी
(3) रसपर्पटी (4) श्वेत पर्पटी

(21) पंचामृत का प्रयोग किया जाता है –
(1) सत्वपातनार्थ (2) अमृतीकरणार्थ
(3) भस्मीकरणार्थ (4) कोई नही

(22) "पक्व जम्बुफल सदृश्य" किस भस्म का वर्ण होता है –
(1) लौह (2) स्वर्ण
(3) हीरक (4) नाग

(23) "द्रुतद्रांव महाभारं" गुणधर्म है –
(1) वंग (2) नाग
(3) ताम्र (4) पारद

(24) पारद के नैसर्गिक दोष है –
(1) विष, वन्हि, मल (2) नाग, वंग
(3) कंचुक दोष (4) सभी

(25) अविपत्तिकर चूर्ण में मिश्रि का प्रमाण होता है –
(1) 10 भाग (2) 20 भाग
(3) 46 भाग (4) 66 भाग

(26) वाग्भटानुसार दन्तधावनार्थ वर्ज्य है –
(1) वट (2) असन
(3) अर्क (4) पीलू

(27) चरकानुसार तृष्णा भेद है –
(1) 4 (2) 5
(3) 6 (4) 7

(28) शुष्क द्रव्य ग्रहण करने चाहिए –
(1) द्विगुण (2) समप्रमाण में
(3) अर्द्ध प्रमाण में (4) कोई नही

(29) आहार परिणामकर भावों की संख्या है –
(1) 4 (2) 6
(3) 8 (4) 10

(30) किसने सुश्रुत संहिता पर टीका नहीं लिखि है –
(1) चक्रपाणि (2) इन्दु
(3) डल्हण (4) जेज्जट

(31) स्वभावोपरमवाद देन है –
(1) न्याय दर्शन (2) चरक
(3) सुश्रुत (4) भाव प्रकाश

(32) रसतरंगिणी के लेखक है –
(1) रस वाग्भट (2) भिक्षु गोविन्द
(3) सदानन्द शर्मा (4) त्र्यम्बक नाथ

(33) चित्रकमूल का विपाक होता है –
(1) मधुर (2) अम्ल
(3) कटु (4) कोई नहीं

(34) ज्योतिष्मति का वानस्पतिक नाम है –
(1) Celastrus Peniculata (2) Trichosanthes dioica
(3) Calotropis procerra (4) Withania Somnifera

(35) पाटला का प्रयोज्यांग है –
(1) मूल (2) मूलत्वक
(3) कन्द (4) फल

(36) आदान काल में किस रस की वृद्धि होती है –
(1) मधुर (2) अम्ल
(3) लवण (4) कटु

(37) जनपदोध्वंसकर भावें में गरीयसी भाव है –
(1) वायु (2) जल
(3) देश (4) काल

(38) निम्न में से कौन अष्टांवेध आहार विशेषायतनों में सम्मिलित नहीं है –
(1) प्रकृति (2) करण
(3) कारण (4) संयोग

(39) कफज प्रमेह की सुख साध्यता का कारण है –
(1) तुल्य दोष दूष्य (2) तुल्य ऋतु
(3) पुराणत्व (4) महात्ययत्यात

(40) विधिसंप्राप्ति का वर्णन किया है –
(1) चरक ने (2) सुश्रुत ने
(3) माधवकर ने (4) सभी ने

(41) मात्रा वस्ति समान नही होती है –
(1) अनुवासन वस्ति से आधी
(2) स्नेह की ह्रस्व मात्रा के
(3) निरूह से $^{1}/_{8}$ भाग के
(4) कोई नहीं

(42) 1 गुंजा का भार होता है सामान्यत: –
(1) 30 mg (2) 120 mg
(3) 240 mg (4) 60 mg

(43) "टिटेनी" का कारण कौनसी ग्रथि की विकृति है –
(1) थायरॉइड (2) पैराथायराइड
(3) थायमस (4) एड्रीनल

(44) दोषों के चय व प्रकोप के प्रकार है –
(1) 2 (2) 4
(3) 6 (4) 8

(45) व्यंजक हेतु है –
(1) दुर्बल हेतु (2) उत्पादक हेतु
(3) प्रेरक हेतु (4) प्रबल हेतु

(46) गलगण्ड में दोषाधिक्य मिलता है –
(1) वात (2) पित्त
(3) कफ (4) वात–कफ

(47) किस व्याधि की प्रवृत्ति वेग के रूप में होती है –
(1) ग्रहणी (2) अर्दित
(3) अपस्मार (4) उन्माद

(48) किस व्याधि में संज्ञानाश की चिकित्सा करने की आवश्यकता होती है –
(1) मोह (2) मूर्च्छा
(3) सन्यास (4) अपस्मार

(49) "प्रसेकादान" किसका पर्याय है –
(1) वमन (2) विरेचन
(3) वस्ति (4) शिरोविरेचन

(50) गुल्म की चिकित्सा में विशेष रूप से ध्यान रखा जाना चाहिए –
(1) वात का (2) पित्त का
(3) कफ का (4) रक्त का

(51) "सेरेब्रल मलेरिया" का कारण है प्लाज्मोडियम -
(1) वाइवेक्स (2) फेल्सिफैरम
(3) मेलेरी (4) सभी

(52) सुश्रुतानुसार घृत देय है –
(1) श्रमजन्य वातिक ज्वर के पूर्व रूप मे
(2) पैत्तिक ज्वर के पूर्वरूप में
(3) कफज ज्वर के पूर्वरूप मे
(4) किसी में नही

(53) स्थावर विष के अधिष्ठान है –
(1) 8 (2) 10
(3) 16 (4) 20

(54) चक्रपाणिमतानुसार कुष्ठ में रक्तमोक्षण करना चाहिए–
(1) 3–3 दिन पर (2) 15–15 दिन पर
(3) 1–1 मास पर (4) 6–6 मास पर

(55) श्रृंग का सम्बन्ध है –
(1) प्रतिश्याय से (2) अर्धावभेदक से
(3) रक्तपित्त से (4) रक्तमोक्षण से

(56) मर्श व प्रतिमर्श में मूल अन्तर है –
(1) काल का (2) मात्रा का
(3) देश का (4) कोई नहीं

(57) दोषों को शाखाओं से कोष्ठ में नहीं लाया जा सकता है –
(1) वृद्धि से (2) विष्यन्दन से
(3) पाचन से (4) दीपन से

(58) उन्माद में वित्रासन कर्म करवाना कौनसा उपशय है –
(1) हेतु विपरीत (2) व्याधिविपरीत
(3) हेतु विपरीतार्थकारी (4) व्याधि विपरीतार्थकारी

(59) चरकानुसार हृदय रोगों में कौनसा पंचकर्म निषिद्ध है –
(1) वमन (2) विरेचन
(3) शिरोविरेचन (4) नस्य

(60) आजस्रिक भेद है –
(1) अजा के असृक का (2) रसायन का
(3) बाजीकरण का (4) अजा के मांस का

(61) कौनसा नस्य दीर्घ काल तक दिया जा सकता है –
(1) विरेचन (2) मर्श
(3) प्रतिमर्श (4) सभी

(62) जेन्ताक प्रकार है –
(1) बौद्धधर्म का ग्रंथ (2) स्नेहन
(3) स्वेदन (4) वस्ति

(63) स्थौल्य का चिकित्सा सूत्र है --
(1) गुरू, संतर्पण (2) गुरू, अपतर्पण
(3) लघु, अपतर्पण (4) लघु संतर्पण

(64) निरूहदान काल है –
(1) अभोजने (2) भोजने
(3) भोजनोत्तर (4) कभी भी

(65) सम्यक विरेचनार्थ अनुकूल स्थिति होगी –
(1) मन्द कफ (2) बहु कफ
(3) मन्द पित्त (4) बहुपित्त

(66) चरकानुसार विरेचन के प्रवर वेगों की संख्या है –
(1) 10 (2) 20
(3) 30 (4) 8

(67) सुश्रुतानुसार स्थावर विष की संख्या है –
(1) 25 (2) 45
(3) 55 (4) 75

(68) सुश्रुतानुसार खनिज विषो की संख्या है –
(1) 10 (2) 8
(3) 6 (4) 2

(69) 16 वर्ष के पुरूष हेतु निरूह वस्ति की मात्रा होगी –
(1) 6 प्रसृत (2) 8 प्रसृत
(3) 10 प्रसृत (4) 12 प्रसृत

(70) चरकानुसार श्रेष्ठ मेध्य रसायन है –
(1) मण्डूकपर्णी (2) यष्टीमधु
(3) गुडुची (4) शंखपुष्पी

(71) दूषी विष का आश्रय है –
(1) दोष (2) धातु
(3) मल (4) स्रोतस

(72) चरकमतानुसार किस पर दूषी विष का प्रभाव नहीं पडता है –
(1) तक्रपांगे (2) हेमपांगे
(3) मद्यपांगे (4) ताम्रपांगे

(73) उदावर्त्ता योनि व्यापद में मिलता है –
(1) अनार्तव (2) अत्यार्त्तव
(3) कृच्छ्रार्त्तव (4) दुष्टार्त्तव

(74) आर्त्तववह स्रौतोदुष्टि का लक्षण है –
(1) अत्यार्त्तव (2) अल्पार्तव
(3) आर्त्तव नाश (4) सभी

(75) सुश्रुतानुसार व्रण के 60 उपक्रमों में सम्मिलित नहीं है –
(1) पाचन (2) वृहंण
(3) आतप (4) स्नेहन

(76) "देहस्य रूधिरं मूलं रूधिरेणैव धारयेत....." कथन है -

(1) चरक (2) सुश्रुत

(3) काश्यप (4) भाव प्रकाश

(77) आर्त्तव का अंजली प्रमाण है --

(1) 2 (2) 4

(3) 6 (4) 1/2

(78) किस मास में गर्भ स्थिरता को प्राप्त कर लेता है –

(1) 4 (2) 5

(3) 7 (4) 7

(79) गर्भ की आकृति पेशी सदृश्य किस महीने में होगी --

(1) प्रथम (2) द्वितीय

(3) तृतीय (4) चतुर्थ

(80) गर्भ में किस मास में मांस व शोणित का उपचय विशेष रूप से होता है–

(1) चतुर्थ मास (2) पंचम मास

(3) षष्टम मास (4) सप्तम मास

(81) ग्रंथिभूत आर्त्तव में दोष होंगे –

(1) वातकफ (2) वातपित्त

(3) पित्तकफ (4) त्रिदोष

(82) परिप्लूता योनिव्यापद की तुलना कर सकते है –

(1) कृच्छ्रार्त्तव से (2) कृच्छ्रमैथुनता से

(3) कृमिज योनि से (4) अतिमैथुन से

(83) कर्णक्ष्वेड में दोषाधिक्य होगा –

(1) वातपित्त (2) वात कफ

(3) पित्त कफ (4) त्रिदोष

(84) पोथकी किस अधिष्ठान की व्याधि है –

(1) संधिगत (2) वर्त्मगत

(3) शुक्लगत (4) कृष्णगत

(85) किस राष्ट्र में सर्वप्रथम सरकारी स्तर पर परिवार नियोजन कार्यक्रम प्रारम्भ हुआ –

(1) अमेरिका (2) इण्डोनेशिया

(3) भारत (4) जापान

(86) केश है –

(1) आत्मज भाव (2) सात्म्यज भाव

(3) पितृजभाव (4) मातृजभाव

(87) चरकानुसार असम्यक नाभिनाल कर्तन जन्य व्याधियाँ है --

(1) उतुण्डिका (2) पिण्डलिका

(3) विनामिका (4) सभी

(88) उपशीर्षक में होने वाला शोथ होता है –
(1) सरूज (2) अरूज
(3) समानवर्णी (4) 2 व 3

(89) वाग्भटानुसार उपवेशन संस्कार का समय है –
(1) चतुर्थ माह (2) पंचम माह
(3) षष्टम माह (4) सप्तम माह

(90) शतपोनक भगन्दर में दोष प्राधान्य होगा –
(1) वात (2) पित्त
(3) कफ (4) त्रिदोष

(91) किस व्याधि में मेद्रचर्म पुनः अपने स्थान पर नहीं आ पाती है –
(1) परिवर्त्तिका (2) निरूद्धप्रकश
(3) अवपाटिका (4) मूत्रकृच्छ्र

(92) व्रणशोथ का सॉतवा उपक्रम है –
(1) अवसेचन (2) उपनाह
(3) पाटन (4) वैकृतापहम

(93) संधिमुक्ति भग्न के प्रकार है –
(1) 4 (2) 12
(3) 6 (4) 8

(94) संदश यन्त्र का प्रमाण होता है –
(1) 16 अंगुल (2) 17 अंगुल
(3) 18 अंगुल (4) आवश्यकतानुसार

(95) शोणित व प्लीहा है –
(1) आत्मज भाव (2) सात्म्यज भाव
(3) पितृजभाव (4) मातृजभाव

(96) "वैरस्यं" नामक स्तन्य में दोष सम्बन्ध होगा –
(1) वात (2) पित्त
(3) कफ (4) त्रिदोष

(97) वेधन कर्म हेतु द्रव्य है –
(1) अलाबू (2) मृत पशु की शिरा
(3) कमल नाल (4) 2 व 3

(98) "प्लुष्टं विवर्णं प्लुष्यतेऽतिमात्रम" कहा गया है –
(1) सम्यक दग्ध हेतु (2) दुर्दग्ध हेतु
(3) अतिदग्ध हेतु (4) प्लुष्ट दग्ध हेतु

(99) लेख्य नैत्र रोग है –
(1) उत्संगिनी (2) लगण
(3) श्लेष्मोपनाह (4) कृमिग्रंथि

(100) नक्तान्ध्यता मिलती है –
(1) पित्त विदग्ध दृष्टि में (2) श्लेष्म विदग्ध दृष्टि में
(3) अर्जुन में (4) पिष्टक में

(101) वातज अधिमन्थ का उपद्रव है –

(1) सिरोत्पात (2) सिराहर्ष

(3) हताधिमन्थ (4) सभी

(102) नस्य कर्म से कौनसा मर्म संबंधित है –

(1) विटप (2) विधुर

(3) श्रृंगाटक (4) शंख

(103) नासागत रक्तपित्त में देय औषध होगी –

(1) ब्राह्मी स्वरस (2) दूर्वास्वरस

(3) पटोल स्वरस (4) गुडुची स्वरस

Answer - Keys

(1)	3	(2)	2	(3)	4	(4)	1	(5)	4
(6)	3	(7)	3	(8)	1	(9)	3	(10)	2
(11)	1	(12)	3	(13)	3	(14)	2	(15)	4
(16)	4	(17)	3	(18)	4	(19)	3	(20)	4
(21)	2	(22)	1	(23)	2	(24)	1	(25)	4
(26)	4	(27)	2	(28)	2	(29)	2	(30)	2
(31)	2	(32)	3	(33)	3	(34)	1	(35)	2
(36)	4	(37)	4	(38)	3	(39)	1	(40)	1
(41)	3	(42)	2	(43)	2	(44)	1	(45)	3
(46)	4	(47)	3	(48)	3	(49)	2	(50)	1
(51)	2	(52)	1	(53)	2	(54)	4	(55)	4
(56)	2	(57)	4	(58)	3	(59)	1	(60)	2
(61)	3	(62)	3	(63)	2	(64)	1	(65)	1
(66)	3	(67)	3	(68)	4	(69)	3	(70)	1
(71)	2	(72)	2	(73)	3	(74)	3	(75)	3
76)	2	(77)	2	(78)	1	(79)	2	(80)	2
(81)	1	(82)	2	(83)	2	(84)	2	(85)	3
86)	3	(87)	4	(88)	4	(89)	2	(90)	1
91)	2	(92)	4	(93)	3	(94)	3	(95)	4
(96)	1	(97)	4	(98)	4	(99)	1	(100)	2
(101)	3	(102)	3	(103)	2				